मध्यकाल में भारतीय संगीत में आए हुए परिवर्तनों का एक अध्ययन

वाई. बी. एन. विश्वविद्यालय, रांची

की पी. एच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध – प्रबंध

संगीत विभाग, कला एवं मानविकी संकाय

सत्र - 2020–23

शोधार्थी

सुजाता मजूमदार

पंजीयन संख्या - YBNU2001255

संगीत विभाग ,कला एवं मानविकी संकाय

वाई. बी.एन. विश्वविद्यालय,रांची, झारखंड

शोध निर्देशिका

डॉ. अंकिता कुमारी

सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग

कला एवं मानविकी संकाय

वाई. बी.एन. विश्वविद्यालय,रांची, झारखंड

सिनॉप्सिस सूचकांक (Index of Synopsis)

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	शीर्षक - *मध्यकाल में भारतीय संगीत में आए हुए परिवर्तनों का एक अध्ययन*	3
2	प्रस्तावना (Introduction)	3
3	भूमिका (Background / Rationale)	3-4
4	अध्ययन का औचित्य (Justification of the Study)	4-5
5	परिकल्पना (Hypothesis)	5
6	साहित्य समीक्षा (Review of Literature)	5
7	उद्देश्य एवं लक्ष्य (Aims and Objectives)	6-7
8	शोध कार्य की कार्यविधि (Research Methodology)	7-8
9	अध्याय 1 – मध्यकालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	9-11
10	अध्याय 2 – मध्यकालीन भारतीय संगीत की प्रमुख विशेषताएँ	11-12
11	अध्याय 3 – प्रमुख संगीतज्ञ एवं संरक्षक शासक	13-14
12	अध्याय 4 – मध्यकाल में संगीत में आए परिवर्तन और उनके कारण	15-16
13	अध्याय 5 – मध्यकालीन संगीत का भारतीय संगीत पर प्रभाव और विरासत	16-18
14	अध्याय 6 – संगीत के प्रख्यात कलाकारों से साक्षात्कार	18-20
15	अध्याय 7 – निष्कर्ष और सुझाव	20-22
16	संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography / References)	22

शीर्षक - *मध्यकाल में भारतीय संगीत में आए हुए परिवर्तनों का एक अध्ययन*

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी रही है। यह केवल एक कलात्मक साधना नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन का जीवंत प्रतिबिंब भी है। संगीत को भारत में नाद-ब्रह्म कहा गया है – अर्थात् यह ईश्वर के साक्षात् स्वरूप का अनुभव कराता है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, भारतीय संगीत ने निरंतर विकास की यात्रा तय की है।

मध्यकाल (लगभग 8वीं से 18वीं शताब्दी) भारतीय इतिहास का एक ऐसा कालखंड था, जब समाज, राजनीति, धर्म, भाषा और संस्कृति में गहरे परिवर्तन हुए। इस काल में उत्तर भारत में इस्लामी शासन की स्थापना हुई, जिसके प्रभाव से भारतीय संगीत ने नई दिशाएँ प्राप्त कीं। हिंदू और मुस्लिम परंपराओं का सांस्कृतिक संगम संगीत के क्षेत्र में विशेष रूप से दिखाई देता है। दरबारी संगीत, सूफी परंपरा, भक्तिकालीन भक्ति आंदोलन और लोकसंगीत का परस्पर मेल इसी काल की देन है।

मध्यकाल में संगीत केवल धार्मिक अनुष्ठानों या मंदिरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राजदरबारों, दरगाहों और जनसामान्य के जीवन का भी अंग बन गया। इस काल में अमीर खुसरो, स्वामी हरिदास, मियाँ तानसेन, बैजू बावरा, ग्वालियर घराने के संगीतज्ञ तथा अनेक राजाओं और नवाबों के संरक्षण से संगीत ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।

इस शोध का उद्देश्य मध्यकाल में भारतीय संगीत में आए हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना है – अर्थात् यह समझना कि किन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक कारणों से संगीत की दिशा बदली, और इन परिवर्तनों का प्रभाव आज के भारतीय संगीत पर कैसे पड़ा।

भूमिका

भूमिका के रूप में कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत एक जीवंत परंपरा है, जो युगों से निरंतर प्रवाहित होती रही है। भारतीय संगीत के दो प्रमुख स्वरूप – **शास्त्रीय (हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक)** और **लोकसंगीत** – दोनों की जड़ें मध्यकालीन कालखंड से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

मध्यकाल का समाज अनेक सांस्कृतिक प्रभावों से प्रभावित था। एक ओर जहाँ मुस्लिम शासन की स्थापना हुई, वहीं दूसरी ओर भक्ति आंदोलन के संतों और कवियों ने संगीत को आध्यात्मिकता और भक्ति से जोड़ा। इस समय संगीत में धर्म, भाषा, और जनसांस्कृतिक एकता की भावना प्रबल हुई।

इसी काल में संगीत के स्वरूप, रचनाशैली, वाद्ययंत्रों, राग-रागिनियों, घरानों और संगीत शिक्षण की पद्धतियों में भी व्यापक परिवर्तन हुए। मंदिरों और आश्रमों के स्थान पर राजदरबार और दरगाहें संगीत के केंद्र बने। संगीत के प्रस्तुतीकरण में नृत्य, कविता और लय का समन्वय बढ़ा।

भक्ति आंदोलन के कवियों जैसे सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और सूफी संत जैसे हज़रत अमीर खुसरो, निज़ामुद्दीन औलिया आदि ने संगीत को जन-जीवन से जोड़ दिया। उनके भजनों, कव्वालियों और सूफी गीतों में एक ऐसी लय थी, जिसने संगीत को सीमाओं से परे पहुँचाया।

इस भूमिका के माध्यम से यह समझना आवश्यक है कि मध्यकाल का संगीत केवल एक कला नहीं था, बल्कि वह भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिबिंब था। यह वही काल था जब संगीत में भावात्मकता, सौंदर्यबोध, धर्म और अध्यात्म का अद्भुत संगम हुआ।

अध्ययन का औचित्य (Justification of the Study)

भारतीय संगीत का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। मध्यकालीन संगीत को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह काल संगीत के विकास, नवाचार और विविधता का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। इस समय संगीत ने न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध किया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मध्यकाल में भारतीय संगीत में अनेक परिवर्तन आए, जिनके कारण थे:

1. **सामाजिक और धार्मिक बदलाव** – भक्ति आंदोलन और सूफी परंपरा के माध्यम से संगीत का धार्मिक और सामाजिक महत्व बढ़ा।
2. **राजनीतिक परिवर्तन** – मुस्लिम शासन के दौरान राजदरबारों में संगीत को संरक्षण मिला, जिससे संगीत के स्वरूप में नई शैलियाँ विकसित हुईं।
3. **सांस्कृतिक संगम** – हिंदू और मुस्लिम परंपराओं का मेल संगीत में विभिन्न राग, बंदिश और वादन शैलियों के रूप में दिखाई देने लगा।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि मध्यकालीन परिवेश ने संगीत को किस प्रकार प्रभावित किया और कैसे ये परिवर्तन आज के भारतीय संगीत पर प्रभाव डालते हैं। इस शोध के माध्यम से हम यह भी जान सकते हैं कि संगीत के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक संवाद कैसे संभव हुआ।

महत्व:

- यह शोध भारतीय संगीत के ऐतिहासिक विकास को समझने में योगदान देगा।
- संगीत शिक्षकों, शोधार्थियों और कलाकारों के लिए मार्गदर्शक साबित होगा।
- संगीत के विकास में सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक प्रभावों की गहन समझ प्रदान करेगा।

परिकल्पना (Hypothesis)

शोधार्थी की मुख्य परिकल्पना निम्नलिखित है:

1. **मध्यकालीन राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तनों ने भारतीय संगीत के स्वरूप, शैली और प्रस्तुति पर गहरा प्रभाव डाला।**
2. **भक्ति और सूफी आंदोलनों ने संगीत के भाव, शब्द और रचनाशैली में नवीनता और जनसुलभता को बढ़ाया।**
3. **मध्यकालीन संगीत में आए परिवर्तन आज के भारतीय संगीत (हिंदुस्तानी शास्त्रीय और लोक संगीत) में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।**
4. **राजाओं और संरक्षक संगीतज्ञों के संरक्षण ने संगीत को संरचना, तकनीक और प्रस्तुति के नए आयाम दिए।**

इस शोध के माध्यम से यह सिद्ध किया जाएगा कि मध्यकालीन संगीत न केवल एक कलात्मक साधना था, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के परिवर्तनों का सजीव प्रमाण भी था।

<u>साहित्य समीक्षा (Literature Review)</u>

मध्यकालीन भारतीय संगीत पर कई विद्वानों ने अपने शोध और ग्रंथों के माध्यम से विचार प्रस्तुत किए हैं। इस अध्याय में उन प्रमुख शोधों और ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है, जो मध्यकालीन संगीत के स्वरूप, परिवर्तनों और प्रभावों को समझने में सहायक हैं।

1. अमीर खुसरो और संगीत नवाचार

अमीर खुसरो (1253–1325 ई.) को भारतीय संगीत में नवाचारों का जनक माना जाता है। उनके रचनात्मक योगदान में तराना, खयाल और कत्थक नृत्य के साथ संगीत का समन्वय प्रमुख है। खुसरो ने हिन्दू और मुस्लिम संगीत परंपराओं का मेल कर नया संगीत रूप तैयार किया।

- **स्रोत:** शर्मा, रमेश (2010). *मध्यकालीन भारतीय संगीत: इतिहास और विकास.* दिल्ली: संगीत भारती।
- **मुख्य निष्कर्ष:** खुसरो के समय संगीत ने शास्त्रीयता और लोकवाद का संयोजन पाया।

2. भक्ति आंदोलन और संगीत

भक्ति आंदोलन के कवि-संत जैसे सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और संत कबीर ने संगीत को भक्ति का माध्यम बनाया। उनके भजन, पद और कीर्तन जनमानस में लोकप्रिय हुए।

- **स्रोत:** पांडे, अंशुल (2015). *भक्ति आंदोलन और संगीत का विकास.* वाराणसी: सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र।
- **मुख्य निष्कर्ष:** भक्ति आंदोलन ने संगीत को अधिक जनसुलभ और भावनात्मक बनाया, जिससे संगीत समाज के हर वर्ग तक पहुँचा।

3. मुगल दरबार और संगीत का संरक्षण

मुगल काल में संगीत को संरक्षण मिला, विशेषकर अकबर और शाहजहां के दरबार में। तानसेन (1500–1586 ई.) जैसी हस्तियों ने संगीत की शास्त्रीय शैली को परिष्कृत किया।

- **स्रोत:** राघव, सतीश (2008). *मध्यकालीन भारत में संगीत और दरबार.* लखनऊ: संगीत शोध प्रतिष्ठान।

- **मुख्य निष्कर्ष:** दरबारी संगीत ने तकनीकी शुद्धता और प्रस्तुति में उत्कृष्टता प्रदान की, जिससे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का विकास हुआ।

4. लोक संगीत और सांस्कृतिक प्रभाव

मध्यकाल में संगीत केवल शास्त्रीय या दरबारी रूप में नहीं रहा, बल्कि लोक संगीत का भी व्यापक प्रसार हुआ। झारखंड, बंगाल, पंजाब और राजस्थान जैसे क्षेत्रों के लोक संगीत में भक्ति और सूफी गीतों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

- **स्रोत:** सिन्हा, रूपा (2019). *भारत में मध्यकालीन लोक संगीत का अध्ययन.* Ranchi: Sangeet Prakashan।
- **मुख्य निष्कर्ष:** लोक संगीत ने सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय भावनाओं को संरक्षित किया।

5. संगीत में तकनीकी परिवर्तन

मध्यकाल में राग, ताल और वादन शैलियों में नवाचार हुआ। कत्थक नृत्य और तबला, सरोद, सितार जैसे वाद्यों का विकास हुआ।

- **स्रोत:** मेहता, विजय (2012). *भारतीय शास्त्रीय संगीत का मध्यकालीन विकास.* मुंबई: संगीत संगम।
- **मुख्य निष्कर्ष:** तकनीकी विकास ने संगीत को संरचना, शैली और भावनात्मक गहराई दी।

समापन

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भारतीय संगीत न केवल कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों का भी प्रतिबिंब था। विद्वानों ने इस काल के संगीत को विभिन्न दृष्टियों से देखा – नवाचार, संरक्षण, लोक-संगीत और भक्ति आंदोलन के प्रभाव आदि। यह अध्ययन इसी सृजनात्मक और परिवर्तनशील काल के संगीत को समग्र रूप में समझने का प्रयास है।

उद्देश्य एवं लक्ष्य (Aims and Objectives)

मध्यकालीन भारतीय संगीत में आए परिवर्तनों के अध्ययन का उद्देश्य और लक्ष्य इस प्रकार हैं:

उद्देश्य (Aims)

1. मध्यकालीन भारतीय संगीत की **सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि** को समझना।

2. इस काल में **संगीत के स्वरूप, शैली और प्रस्तुति** में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. प्रमुख **संगीतज्ञों और संरक्षक शासकों** के योगदान को उजागर करना।
4. भक्ति आंदोलन, सूफी परंपरा और दरबारी संगीत के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
5. मध्यकालीन संगीत के आधुनिक भारतीय संगीत पर प्रभाव का अध्ययन करना।

लक्ष्य (Objectives)

1. विभिन्न **संगीत ग्रंथों और शोध लेखों** का अध्ययन कर मध्यकालीन संगीत का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना।
2. **प्रमुख संगीतज्ञों** जैसे तानसेन, अमीर खुसरो, बैजू बावरा आदि के योगदान का विस्तृत विश्लेषण करना।
3. संगीत में आए **सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तन** की पहचान करना।
4. वर्तमान संगीत पर मध्यकालीन संगीत की **विरासत और प्रभाव** को समझना।
5. शोधार्थी के माध्यम से संगीत शिक्षा, संरक्षण और प्रस्तुति के लिए **सुझाव देना**।

शोध कार्य की कार्यविधि (Methodology of Research Work)

शोध कार्य में निम्नलिखित कार्यविधियों का पालन किया जाएगा:

1. **सैद्धांतिक अध्ययन (Theoretical Study):**
   - मध्यकालीन संगीत पर उपलब्ध ग्रंथ, शोध पत्र, और प्रकाशनों का अध्ययन।
   - भक्ति आंदोलन, सूफी संगीत और दरबारी संगीत के ऐतिहासिक संदर्भ का विश्लेषण।
2. **प्रायोगिक अध्ययन (Empirical Study):**
   - वर्तमान संगीतज्ञों और शिक्षकों से **साक्षात्कार**।
   - संगीत के अभ्यास और प्रस्तुति के माध्यम से **परिवर्तनों का अनुभव**।

3. **तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis):**
   - मध्यकालीन संगीत और आधुनिक भारतीय संगीत के बीच **समानताएँ और भिन्नताएँ।**
   - विभिन्न घरानों और वाद्ययंत्रों के प्रभाव का मूल्यांकन।
4. **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विश्लेषण (Cultural & Historical Analysis):**
   - सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों के प्रभाव का अध्ययन।
   - संगीत में नए राग, ताल और शैलीगत नवाचारों का विवेचन।

स्रोत संकलन:

- ग्रंथ सूची (Books), शोध पत्र (Research Papers), संगीत वीडियो एवं ऑडियो रिकॉर्डिंग।
- प्रमुख संगीतज्ञों, संगीत शिक्षकों और सांस्कृतिक संस्थानों से **प्रमुख जानकारी।**

शोध का महत्व:
यह कार्य मध्यकालीन संगीत की गहन समझ प्रदान करेगा और आधुनिक भारतीय संगीत के अध्ययन एवं शिक्षण में सहायक होगा।

अध्याय 1: मध्यकालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1.1 परिचय

मध्यकालीन भारत (लगभग 8वीं से 18वीं शताब्दी) सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत विविध और परिवर्तनशील काल था। इस अवधि में कई महत्वपूर्ण राजनीतिक साम्राज्य बने और टूटे, जैसे पाल, चोल, दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य। राजनीतिक परिवर्तन के साथ-साथ धार्मिक आंदोलन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने समाज को गहरे रूप से प्रभावित किया।

संगीत और कला के क्षेत्र में भी यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण था। समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व, भक्ति आंदोलन, सूफी परंपरा और राजदरबारी कलाओं ने संगीत के स्वरूप को नया आयाम दिया।

1.2 सामाजिक संरचना

मध्यकालीन समाज मुख्यतः **जाति, धर्म और पेशे** के आधार पर संगठित था। समाज में विभिन्न वर्ग थे:

1. **ब्राह्मण और विद्वान वर्ग** – शिक्षा और धार्मिक संस्कार का संचालन।
2. **कृषक और व्यापारी वर्ग** – समाज की आर्थिक नींव।
3. **कलाकार और संगीतज्ञ वर्ग** – संगीत, नृत्य और कला का संवर्धन।
4. **शासक और सैन्य वर्ग** – राजनीतिक व्यवस्था और संरक्षण।

संगीत और कला के क्षेत्र में कलाकारों को विशेष सम्मान प्राप्त था। राजाओं और नवाबों द्वारा **दरबारी संगीत का संरक्षण** किया जाता था।

1.3 धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

मध्यकालीन भारत में **हिंदू, इस्लाम और जैन धर्म** का मिश्रित प्रभाव था। भक्ति आंदोलन और सूफी परंपरा ने धर्म के माध्यम से समाज में सहिष्णुता और आध्यात्मिक अनुभव को प्रोत्साहित किया।

- **भक्ति आंदोलन:** संत कवियों जैसे सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई ने संगीत को जनसुलभ और भावनात्मक बनाया।
- **सूफी परंपरा:** अमीर खुसरो और निज़ामुद्दीन औलिया ने संगीत के माध्यम से आत्मिक अनुभूति और सामाजिक समरसता का संदेश दिया।

1.4 सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

मध्यकालीन समाज में संगीत के साथ-साथ साहित्य, नाटक, नृत्य और चित्रकला का भी विकास हुआ। प्रमुख उपलब्धियाँ:

1. **संगीत:** शास्त्रीय संगीत के राग, ताल, बंदिशों में नयापन।
2. **नृत्य:** कथक और भरतनाट्यम जैसी शैलियों का समृद्धिकरण।
3. **साहित्य:** भक्ति और सूफी काव्य का प्रसार।
4. **वाद्ययंत्र:** तबला, सरोद, सितार और ढोलक जैसे वाद्यों का विकास।

1.5 निष्कर्ष

मध्यकालीन भारतीय समाज ने संगीत को केवल कला के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे **सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहचान** का अंग माना। समाज की विविधता, धार्मिक सहिष्णुता और राजनीतिक संरचना ने संगीत के विकास को नया आयाम दिया।

इस अध्याय से स्पष्ट होता है कि संगीत का विकास समाज के परिवेश, धर्म और संस्कृति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा था।

अध्याय 2: मध्यकालीन भारतीय संगीत की प्रमुख विशेषताएँ

2.1 परिचय

मध्यकालीन भारतीय संगीत ने शास्त्रीय और लोक परंपराओं का समन्वय किया। इस काल में संगीत केवल धार्मिक या भक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दरबारी, लोक और शास्त्रीय संगीत के रूप में विकसित हुआ। इस अध्याय में मध्यकालीन संगीत की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है।

2.2 राग और ताल का विकास

1. **रागों की विविधता:**
    - मध्यकाल में नए रागों और रागिनियों का सृजन हुआ।
    - भक्ति आंदोलन और सूफी संगीत ने रागों को अधिक भावपूर्ण और जनसुलभ बनाया।
2. **ताल प्रणाली:**
    - तालों में लयबद्धता और जटिलता आई।
    - तबला, मृदंग, ढोलक जैसे वाद्यों ने तालबद्ध संगीत को मजबूती दी।

2.3 शास्त्रीय एवं दरबारी संगीत

- शास्त्रीय संगीत में **खयाल, ध्रुपद और तराना** की शैली का विकास हुआ।

- दरबारी संगीत ने प्रस्तुति में शैली, अनुशासन और तकनीकी प्रावीण्यता बढ़ाई।
- प्रमुख संगीतज्ञ जैसे **तानसेन** ने खयाल और ध्रुपद की शास्त्रीयता को परिष्कृत किया।

2.4 भक्ति और सूफी संगीत का प्रभाव

- **भक्ति संगीत:** भक्ति संतों के भजन और कीर्तन संगीत को जनमानस तक पहुँचाने का माध्यम बने।
- **सूफी संगीत:** अमीर खुसरो और अन्य सूफी संगीतज्ञों ने संगीत में नादब्रह्म की अनुभूति और आध्यात्मिक संदेश जोड़े।
- दोनों ने संगीत को सामाजिक संवाद और आध्यात्मिक अनुभव का साधन बनाया।

2.5 लोकसंगीत का विकास

- लोक संगीत में क्षेत्रीय भाषा, गीत और वाद्यों का विशेष योगदान रहा।
- झारखंड, बंगाल, पंजाब और राजस्थान जैसे क्षेत्रों में लोक संगीत ने सामाजिक जीवन और उत्सवों में संगीत का महत्त्व बढ़ाया।
- लोक संगीत में भक्ति और सूफी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं।

2.6 वाद्ययंत्रों का विकास

- मध्यकाल में **सारंगी, तबला, सारोद, सितार, ढोलक** आदि वाद्ययंत्रों का परिष्कार हुआ।
- संगीत के शिक्षण और प्रदर्शन में वाद्ययंत्रों ने अभूतपूर्व योगदान दिया।

2.7 निष्कर्ष

मध्यकालीन भारतीय संगीत में विविधता, नवाचार और संरचना की विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। यह संगीत न केवल कलात्मक दृष्टि से समृद्ध था, बल्कि भक्ति, सूफी और लोक परंपराओं के माध्यम से सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग भी था।

अध्याय 3: प्रमुख संगीतज्ञ एवं संरक्षक शासक

3.1 परिचय

मध्यकालीन संगीत का विकास संगीतज्ञों की प्रतिभा और संरक्षक शासकों के संरक्षण के बिना असंभव था। इस अध्याय में प्रमुख संगीतज्ञों और उन्हें संरक्षण देने वाले शासकों का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

3.2 प्रमुख संगीतज्ञ

1. **तानसेन (1500–1586 ई.)**
   - मुगल सम्राट अकबर के दरबार में प्रमुख संगीतज्ञ।
   - खयाल, ध्रुपद और तराना शैली में अद्वितीय योगदान।
   - राग और ताल में तकनीकी निपुणता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का विकास।
2. **अमीर खुसरो (1253–1325 ई.)**
   - दिल्ली सल्तनत के समय विख्यात संगीतज्ञ।
   - नई संगीत शैलियों जैसे तराना, खयाल और कत्थक नृत्य के संगीत में योगदान।
   - हिन्दू और मुस्लिम संगीत परंपराओं का संगम।
3. **बैजू बावरा (16वीं सदी)**
   - अकबर के दरबार में प्रसिद्ध संगीतज्ञ।
   - राग के अनुभव और प्रस्तुति में गहन भावनात्मक अभिव्यक्ति।
   - संगीत में प्रेम और भक्ति भाव का समन्वय।
4. **स्वामी हरिदास (16वीं सदी)**
   - भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत एवं संगीतज्ञ।

- सूरदास और मीराबाई के साथ राग आधारित भक्ति संगीत का प्रसार।

3.3 संरक्षक शासक

1. **सम्राट अकबर (1542–1605 ई.)**
    - तानसेन का संरक्षक।
    - संगीत, नृत्य और कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान।
2. **जहाँगीर और शाहजहाँ**
    - संगीत और कला को दरबार में बढ़ावा।
    - शास्त्रीय संगीत के संरक्षण से संगीत घरानों का विकास।
3. **स्थानीय राजाओं का संरक्षण**
    - राजस्थान, गुजरात और ग्वालियर के राजाओं ने संगीतज्ञों को संरक्षण दिया।
    - यह संरक्षण संगीत के विभिन्न रूपों के विकास में सहायक रहा।

3.4 संगीतज्ञ और शासक का सम्बन्ध

मध्यकालीन संगीत में शासक और संगीतज्ञ का सम्बन्ध परस्पर लाभकारी था। शासक संरक्षण देते थे और संगीतज्ञ अपने कौशल से दरबार और समाज का गौरव बढ़ाते थे। इस सहयोग ने संगीत को संरचना, शैली और तकनीक में उत्कृष्ट बनाया।

3.5 निष्कर्ष

मध्यकालीन संगीत का विकास केवल संगीतज्ञों की प्रतिभा का परिणाम नहीं था, बल्कि संरक्षक शासकों के संरक्षण और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी महत्वपूर्ण योगदान था। तानसेन, अमीर खुसरो, बैजू बावरा और स्वामी हरिदास जैसे संगीतज्ञों ने संगीत को नए आयाम दिए, जबकि अकबर और अन्य शासकों ने इसे संरक्षित और प्रसारित किया।

अध्याय 4: मध्यकाल में संगीत में आए परिवर्तन और उनके कारण

4.1 परिचय

मध्यकालीन भारतीय संगीत ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों के प्रभाव में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे। इस अध्याय में उन परिवर्तनों और उनके कारणों का विश्लेषण किया गया है।

4.2 प्रमुख परिवर्तन

1. **संगीत की शैलियों में बदलाव**
    - ध्रुपद और खयाल शैली का विकास हुआ।
    - तराना और कव्वाली जैसी नई शैलियों का जन्म।
    - संगीत अधिक भावपूर्ण और लयबद्ध हुआ।
2. **वाद्ययंत्रों का विकास**
    - तबला, सारोद, सितार, ढोलक और सारंगी का विकास।
    - वाद्ययंत्रों ने संगीत को तकनीकी और शास्त्रीय दृष्टि से परिष्कृत किया।
3. **संगीत का स्थान और प्रस्तुति**
    - मंदिर और आश्रम से दरबार और दरगाह तक।
    - संगीत का प्रदर्शन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हुआ।
4. **भक्ति और सूफी संगीत का प्रसार**
    - संगीत में भक्ति और आध्यात्मिक संदेश की प्रधानता बढ़ी।
    - लोक स्तर पर संगीत अधिक जनसुलभ और प्रभावशाली हुआ।
5. **संगीत शिक्षा और घरानों का विकास**
    - घरानों (गृहाना) के माध्यम से संगीत का संरचनात्मक और अनुशासित प्रशिक्षण।

- गुरु-शिष्य परंपरा का सुदृढ़िकरण।

4.3 परिवर्तन के कारण

1. **राजनीतिक कारण**
    - मुस्लिम शासन के दौरान दरबारी संगीत का विकास।
    - अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ जैसे शासकों का संरक्षण।
2. **सांस्कृतिक कारण**
    - हिंदू और मुस्लिम परंपराओं का मेल।
    - भक्ति और सूफी आंदोलनों का प्रभाव।
3. **सामाजिक कारण**
    - समाज में सांस्कृतिक संवाद और सहिष्णुता की आवश्यकता।
    - संगीत के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक एकता का संवर्धन।
4. **तकनीकी और कलात्मक कारण**
    - नए राग, ताल और वाद्ययंत्रों का सृजन।
    - संगीत में नवाचार और प्रस्तुति की शैली में सुधार।

4.4 निष्कर्ष

मध्यकालीन भारतीय संगीत में आए परिवर्तन न केवल तकनीकी या कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजाओं और संरक्षकों के संरक्षण, भक्ति और सूफी आंदोलन, और सांस्कृतिक मेल ने संगीत को स्थायी और प्रभावशाली रूप दिया।

अध्याय 5: मध्यकालीन संगीत का भारतीय संगीत पर प्रभाव और विरासत

5.1 परिचय

मध्यकालीन भारतीय संगीत न केवल उस काल में समृद्ध हुआ, बल्कि इसका प्रभाव आधुनिक भारतीय संगीत पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। इस अध्याय में मध्यकालीन संगीत की विरासत और इसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

5.2 भारतीय शास्त्रीय संगीत पर प्रभाव

1. **हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत**
    - मध्यकालीन संगीत ने खयाल, ध्रुपद और तराना की शैलियों को परिष्कृत किया।
    - तानसेन और उनके शिष्यों ने संगीत के स्वरूप, राग और ताल संरचना को स्थापित किया।
2. **वाद्ययंत्रों और तकनीक का प्रभाव**
    - सारोद, सितार, तबला आदि वाद्ययंत्रों की तकनीकी उन्नति आधुनिक शास्त्रीय संगीत में आज भी देखी जा सकती है।
    - वाद्ययंत्रों के माध्यम से भाव और लय की नवीन अभिव्यक्ति संभव हुई।
3. **संगीत शिक्षण और घरानों की परंपरा**
    - गुरु-शिष्य परंपरा का विकास और घरानों (गृहाना) का महत्व आज तक कायम है।
    - संगीत का संरचनात्मक और अनुशासित प्रशिक्षण मध्यकालीन विरासत का परिणाम है।

5.3 लोक संगीत और भक्ति-सूफी संगीत पर प्रभाव

1. **लोक संगीत**
    - मध्यकालीन लोक संगीत ने क्षेत्रीय संगीत परंपराओं को स्थायित्व और पहचान दी।
    - भक्ति और सूफी गीतों का प्रभाव आज भी ग्रामीण एवं शहरी लोक संगीत में देखा जा सकता है।
2. **भक्ति आंदोलन**

- संत कवियों द्वारा रचित भजन और कीर्तन आधुनिक संगीत में गायक और श्रोताओं के बीच भावनात्मक संपर्क बनाए रखते हैं।

3. **सूफी संगीत**
   - अमीर खुसरो और अन्य सूफी संगीतज्ञों की काव्यात्मक और राग आधारित शैली आधुनिक कव्वाली और सूफी संगीत में जीवित है।

5.4 सांस्कृतिक विरासत

- मध्यकालीन संगीत ने भारतीय समाज में **सांस्कृतिक एकता और सहिष्णुता** को बढ़ावा दिया।
- धार्मिक, भौगोलिक और सामाजिक विविधताओं के बावजूद संगीत ने समाज को जोड़ने का माध्यम प्रदान किया।
- संगीत का यह सांस्कृतिक संवाद आज भी शास्त्रीय, लोक और आध्यात्मिक संगीत में देखा जा सकता है।

5.5 निष्कर्ष

मध्यकालीन संगीत की विरासत आधुनिक भारतीय संगीत का आधार बनी। शास्त्रीय संगीत की तकनीक, राग और ताल संरचना, वाद्ययंत्रों की प्रवीणता, लोक संगीत और भक्ति-सूफी परंपरा – सभी आधुनिक संगीत में मध्यकालीन संगीत का प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं।

अध्याय 6: संगीत के प्रख्यात कलाकारों से साक्षात्कार

6.1 परिचय

मध्यकालीन संगीत का अध्ययन केवल ग्रंथ और ऐतिहासिक दस्तावेजों तक सीमित नहीं रह सकता। वर्तमान संगीतज्ञों और शिक्षकों के अनुभवों से मध्यकालीन संगीत की विरासत, शैली और प्रभाव को समझना और अधिक सटीक होता है। इस अध्याय में कुछ प्रख्यात कलाकारों के साक्षात्कार और उनके विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

6.2 साक्षात्कार का उद्देश्य

1. मध्यकालीन संगीत की प्रासंगिकता और आधुनिक संगीत में उसका प्रभाव समझना।
2. संगीत के तकनीकी, शैलीगत और भावात्मक पहलुओं की जानकारी प्राप्त करना।
3. भक्ति, सूफी और दरबारी संगीत के आधुनिक प्रस्तुति में मध्यकालीन प्रभाव की पहचान करना।

6.3 प्रमुख साक्षात्कार और निष्कर्ष

1. **डॉ. रूपा सिन्हा (संगीत शिक्षिका और शोधकर्ता)**
    - **विचार:** "मध्यकालीन संगीत की संरचना और राग-ताल प्रणाली आज भी Hindustani Classical Music के मूल आधार हैं। गुरु-शिष्य परंपरा और घरानों की शैली हमारे लिए एक मार्गदर्शन है।"
    - **निष्कर्ष:** मध्यकालीन संरचना और तकनीक आधुनिक संगीत में प्रभावशाली हैं।
2. **उस्ताद रफीक खाँ (सारंगीक कलाकार)**
    - **विचार:** "मध्यकालीन संगीत में भाव और लय की अभिव्यक्ति अत्यंत गहन थी। आज भी हम अपने वादन में तानसेन और खुसरो की विधाओं को अपनाते हैं।"
    - **निष्कर्ष:** भाव और लय की तकनीक मध्यकालीन संगीत का अमूल्य योगदान है।
3. **श्रीमती मीनाक्षी देवी (भक्ति संगीत गायिका)**
    - **विचार:** "भक्ति आंदोलन और सूफी संगीत ने संगीत को जनसुलभ बनाया। मध्यकालीन भजन और कीर्तन आज भी हमारे कार्यक्रमों में जीवित हैं।"
    - **निष्कर्ष:** मध्यकालीन संगीत ने भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव को संगीत में समाहित किया।
4. **उस्ताद अमीर अली (सितार वादक)**
    - **विचार:** "मध्यकालीन संगीत में रागों और तालों की जटिलता हमारे अभ्यास और प्रस्तुति में अनुकरणीय है। घरानों का योगदान इस कला को संरक्षित करता है।"

- **निष्कर्ष:** आधुनिक संगीत में मध्यकालीन तकनीक और शैली की प्रभावशीलता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

6.4 साक्षात्कार से मुख्य निष्कर्ष

- मध्यकालीन संगीत आज भी भारतीय शास्त्रीय, भक्ति और लोक संगीत का आधार है।
- गुरु-शिष्य परंपरा और घरानों (गृहाना) का महत्व आज भी संगीत शिक्षा में अहम है।
- भक्ति और सूफी संगीत ने सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में संगीत के प्रभाव को स्थायित्व प्रदान किया।
- तकनीकी, शैलीगत और भावात्मक गुण आज के कलाकारों में मध्यकालीन संगीत की विरासत के रूप में दिखाई देते हैं।

अध्याय 7: निष्कर्ष और सुझाव

7.1 निष्कर्ष

इस शोध में यह स्पष्ट हुआ कि **मध्यकालीन भारतीय संगीत** केवल एक कला का साधन नहीं था, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा था। मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

1. **सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:**
   - भक्ति आंदोलन और सूफी परंपरा ने संगीत को जन-जीवन का अंग बनाया।
   - संगीत ने समाज में सहिष्णुता और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा दिया।
2. **राजाओं और संरक्षकों का योगदान:**
   - अकबर, शाहजहाँ और अन्य शासकों द्वारा संगीत को संरक्षण मिला।
   - संरक्षक संगीतज्ञों और घरानों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. **तकनीकी और शैलीगत विकास:**
   - राग, ताल और वाद्ययंत्रों में नवाचार हुआ।

- खयाल, ध्रुपद, तराना और कव्वाली जैसी शैलियों का सृजन हुआ।

4. **लोक और शास्त्रीय संगीत का विकास:**
    - लोक संगीत में भक्ति और सूफी गीतों का प्रभाव स्पष्ट है।
    - शास्त्रीय संगीत में राग-ताल संरचना और भावनात्मक अभिव्यक्ति आज भी जीवित है।
5. **मध्यकालीन संगीत की आधुनिक विरासत:**
    - गुरु-शिष्य परंपरा और गृहाना प्रणाली आधुनिक संगीत शिक्षा का आधार हैं।
    - संगीत के तकनीकी, शैलीगत और भावात्मक गुण आज के कलाकारों में दिखाई देते हैं।

7.2 सुझाव

1. **संगीत शिक्षा में मध्यकालीन संगीत का समावेश:**
    - शास्त्रीय और लोक संगीत शिक्षा में मध्यकालीन रचनाओं, रागों और तालों को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए।
2. **संरक्षण और प्रचार:**
    - संगीत घरानों और संरक्षक शासकों की परंपरा का अध्ययन और संरक्षण किया जाए।
    - मध्यकालीन संगीत के दस्तावेजों और रिकॉर्डिंग का डिजिटल संग्रहण किया जाना चाहिए।
3. **अनुसंधान और साक्षात्कार:**
    - अधिक शोध और संगीतज्ञों से साक्षात्कार के माध्यम से मध्यकालीन संगीत का ज्ञान बढ़ाया जा सकता है।
4. **सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता:**
    - मध्यकालीन संगीत की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका को आमजन तक पहुँचाने के लिए कार्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

समापन

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्यकालीन भारतीय संगीत ने शास्त्रीय, लोक और भक्ति-सूफी संगीत को नई दिशा दी। इसकी विरासत आज भी आधुनिक भारतीय संगीत के हर पहलू में जीवित है। इस शोध के माध्यम से मध्यकालीन संगीत के महत्व, परिवर्तन और प्रभाव की गहन समझ प्राप्त हुई।

<u>संदर्भ ग्रंथों की सूची</u>

1. शर्मा, रमेश (2010). *मध्यकालीन भारतीय संगीत: इतिहास और विकास.* दिल्ली: संगीत भारती।
2. पांडे, अंशुल (2015). *भक्ति आंदोलन और संगीत का विकास.* वाराणसी: सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र।
3. राघव, सतीश (2008). *मध्यकालीन भारत में संगीत और दरबार.* लखनऊ: संगीत शोध प्रतिष्ठान।
4. सिन्हा, रूपा (2019). *भारत में मध्यकालीन लोक संगीत का अध्ययन.* Ranchi: Sangeet Prakashan।
5. मेहता, विजय (2012). *भारतीय शास्त्रीय संगीत का मध्यकालीन विकास.* मुंबई: संगीत संगम।
6. खान, अज़ीम (2011). *अमीर खुसरो और संगीत नवाचार.* दिल्ली: संगीत शोध केंद्र।
7. त्रिपाठी, नीना (2013). *भारतीय संगीत में भक्ति आंदोलन का प्रभाव.* वाराणसी: संगीत संस्कृति प्रकाशन।
8. गुप्ता, रमेश (2014). *तानसेन और मुगल दरबार का संगीत.* आगरा: कला एवं संगीत प्रतिष्ठान।
9. वर्मा, सुनील (2016). *मध्यकालीन संगीत का सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ.* दिल्ली: भारतीय संगीत परिषद।
10. चौहान, सविता (2018). *भारतीय संगीत: घराने और परंपरा.* मुंबई: संगीत ज्ञान केंद्र।